राष्ट्रीय-संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

16-17 फरवरी, 2019

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता

प्रति,

....

....

....

आयोजक

शिक्षा विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

pssou.ac.in

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

16-17 फरवरी, 2019

विषय

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता

आयोजक

शिक्षा विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

pssou.ac.in

- विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी सीापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रूप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्यायः परम् तपः' के ध्येय वाक्य के साथ 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 06 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 144 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 71 एकड़ में फैला हुआ है।

- संगोष्ठी के विषय में -

सृजनात्मकता की पहचान चार तत्वों से की जा सकती है प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, विस्तार। यह सृजनशील बालकों में निहित विशिष्ट गुण है, ऐसे बालक स्वतन्त्र निर्णय शक्ति वाले होते है, अपनी बात पर दृढ़ होते है तथा जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान में रुचि लेते है। नवीन संबंधों को जोड़ना एवं उन्हे अभिव्यक्त करना सृजनात्मकता की विशेषता है।

सृजनात्मकता प्रत्येक व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज मे कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य एवं व्यवसाय मे सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में सृजन की संभावनाएँ होती है और निश्चित ही उसका विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान मानव जीवन में अनेक परिवर्तन आ रहे है। प्रत्येक पग पर उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नवीन परिस्थितियों का सामना करने हेतु सृजन की प्रतिभा को विकसित किया जाना चाहिए।

बालको में सृजनात्मकता दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिये उत्साहजनक वातावरण का निर्माण आवश्यक है सृजनात्मकता के विकास में शिक्षा एवं शिक्षक दोनों की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का यह कार्य है कि बालक में निहित सृजनात्मकता को पहचान कर उसके विकास हेतु समुचित व्यवस्था या वातावरण उत्पन्न करें। सृजनात्मकता के विकास हेतु समुचित अवसर प्रदान किए जाएँ, क्योंकि विद्यालय या विद्यालय के बाहर प्राप्त अनुभवों में उत्कृष्ट कोटि की सृजनात्मकता निहित रहती है, उदाहरणस्वरुप किसी बालक की अभिव्यक्ति का माध्यम खेलकूद हो सकता है। जिमनास्टिक का अभ्यास नृत्यकला की आधारशिला बन सकता है। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसकी सृजनात्मकता की प्रवृति की अभिव्यकित हेतु उपयुक्त माध्यम ढूँढने में समुचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक अधिक है और व्यवहारिक कम। ऐसे में विषय वस्तु को याद करने पर अधिक बल दिया जाता है। बालकों में किस प्रकार की सृजनात्मकता गुण है, उसको पहचानना और उस पर आधारित पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि का प्रयोग करना आदि कार्यो का आभाव अभी